पूर्णा अग्रवाल

कलहपूर्ण वैवाहिक जीवन

विवाह संस्कार का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में सूर्य और सोम विवाह के रूप में मिलता है। विवाह से परिवार बनता है और एक स्वस्थ एवं खुशहाल परिवार ही एक सतत प्रगतिशील एवं खुशहाल समाज का निर्माण कर सकता है। दांपत्य जीवन में जब कलह उत्पन्न होने लगता है तो सामाजिक विघटन भी स्वतः होने लगता है। विवाह संस्कार को पाणिग्रहण संस्कार भी कहते हैं।

पुरुष और महिला परस्पर विरुद्ध स्वभाव की दो मौलिक शक्तियां हैं और परस्पर सामंजस्य से ही सुखी वैवाहिक जीवन संभव है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से भी लग्नेश और सप्तमेश किसी भी कुंडली में नैसर्गिक मित्र नहीं हो सकते।

जन्मकुंडली के आधार पर वैवाहिक जीवन में कलह का निर्धारण करना ही इस लेख का विषय है।

साहित्यिक सन्दर्भ एवं मुख्य घटक

वैवाहिक जीवन के लिए लग्न से सप्तम भाव के आकलन के अतिरिक्त द्वितीय (कुटंब वृद्धि, धन संचय), चतुर्थ (घर का सुख), पंचम (संतान), अष्टम (आयु+मांगल्य), नवम (भाग्य) और द्वादश (शैय्या सुख) भाव/भावेशों का आकलन भी किया जाता है। नवांश वर्ग कुंडली, दशा, वैवाहिक सुख प्रदाता शुक्र (पुरुषों हेतु) और पति कारक बृहस्पति (स्त्रियों हेतु) आदि का आकलन भी महत्वपूर्ण होता है।

इन भाव/भावेशों पर शुभ प्रभाव सुखी वैवाहिक जीवन को दर्शाता है जबकि अशुभ प्रभाव कलहपूर्ण वैवाहिक जीवन का संकेत देता है।

बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अथ जाया भाव फलाध्यायः के अनुसार :

कृपया नोट करें कि निम्न श्लोक पुरुष जातक के अनुसार लिखे गए हैं, स्त्री जातक की कुंडली में भी यही योग उसके पति के लिए भी लागू होते हैं।

सप्तमे तु स्थिते शुक्रेऽतीवकामी भवेन्नरः।

यत्रकुत्रस्थिते पापयुते स्त्रीमरणं भवेत्

यदि सप्तम भाव में शुक्र स्थित हो तो जातक अति कामी होता है। किसी भी भाव में शुक्र की युति यदि पापी ग्रह से हो तो पत्नी का मरण होता है।

नीचे शत्रुगृहेऽस्ते वा निर्बले च कलत्रपे।

तस्यापि रोगिणी भार्या बहुभार्यो नरो भवेत्।।

सप्तमेश यदि नीचराशिस्थ, शत्रुराशिस्थ, अस्त या निर्बल हो तो जातक की पत्नी रोगिनी होती है या उसकी कई पत्नियाँ होती हैं।

षष्ठाष्टमव्ययस्थाने मन्देशो दुर्बलो यदि ।

नीचराशिगतो वापि दारनाशं विनिर्दिशेत्

सप्तमेश निर्बल होकर 6, 8, 12 भाव में हो तो भी स्त्री का नाश होता है।

जामित्रे मन्दभौमे च तदीशे मन्दभूमिजे

वेश्या वा जारिणी वाऽपि तस्य भार्या न संशयः ।

भौमांशकगते शुक्रे भौमक्षेत्रगतेऽथवा ।।

यदि सप्तम स्थान में शनि या मंगल हो या शनि या मंगल ही सप्तमेश हो तो मनुष्य की पत्नी वेश्या या परपुरुष गामिनी होती है।

कलत्रे तत्पतौ वापि पापग्रहसमन्विते ।

भार्याहानिं वदेत् तस्य निर्बले च विशेषतः ।।

सप्तम भाव या सप्तमेश पाप ग्रहों से युक्त हो या निर्बल हो तो पत्नी का नाश होता है।

कलत्रस्थानगे चन्द्रे तदीशे व्ययराशिगे।

कारको बलहीनश्च दारसौख्यं न विद्यते ।।

सप्तम भाव में चन्द्र, सप्तमेश द्वादशभावस्थ हो और कारक ग्रह निर्बल हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं मिलता।

उपरोक्त के अतिरिक्त, वैवाहिक जीवन में कलह के अन्य मुख्य घटक हैं :

1) सप्तम भाव और भावेश का पाप–कर्तरी, निर्बल होना या उन पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव होना।

2) विवाह कारक का अस्त या निर्बल होना या त्रिक भाव/भावेश से सम्बन्ध होना।

3) नवांश चार्ट में सप्तम भाव, सप्तमेश और कारक का निर्बल होना।

4) द्वादश भाव (शय्या सुख) का पीड़ित होना।

5) कर्क लग्न के जातकों में अक्सर कलहपूर्ण दांपत्य जीवन देखा गया है।

6) अष्टकवर्ग में सप्तम भाव में कम शुभ बिंदुओं का होना।

7) यदि लग्न में राहु हो व जन्मपत्रिका में सूर्य और शुक्र की युति हो।

8) सप्तम भाव में सूर्य–चंद्र–शुक्र की युति।

9) मंगल की अष्टम में स्थिति को महादोष माना गया है, परन्तु सप्तम में स्थिति भी प्रबल दोषकारक है।

10) वर–वधू का कुंडली मिलान न हो तो भी मानसिक विचारों में भिन्नता के कारण कलह होता है।

11) मांगलिक दोष भी पति–पत्नी के मध्य तनाव का कारक होता है।

12) सूर्य, राहु, शनि और द्वादशेश पृथकतावादी ग्रह है, जो सप्तम और द्वितीय भावों पर अशुभ प्रभाव डालते हैं जिससे वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण होता है।

13) बहु–विवाह योग हो।

उदाहरण–1 :

महिला, 31 दिसंबर 1987, 21:55 बजे, ग्वालियर

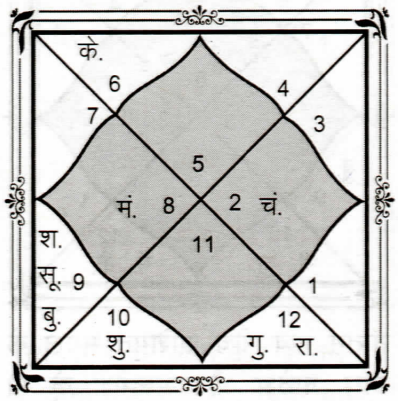

नवांश कुंडली

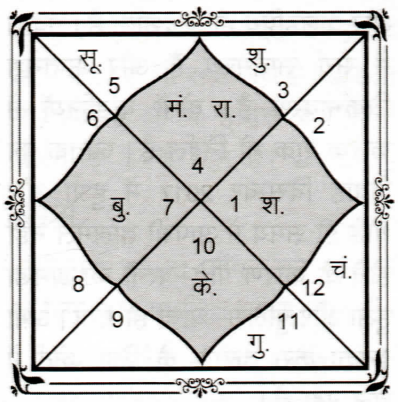

जातिका का वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण है। सप्तम भाव सप्तमेश से दृष्ट होने से बली है, परन्तु मंगल की दृष्टि से कुछ अशुभता भी है। सप्तमेश की स्थिति और युति भी ठीक है। गुरु अष्टम में अशुभ है परन्तु स्वराशि भी है। जन्मकुंडली में स्थिति मिश्रित सी है, परन्तु नवांश लग्न पीड़ित, सप्तमेश नीचराशिस्थ और कारक गुरु अष्टमस्थ होने के कारण वैवाहिक जीवन में सतत कलह रहती है। 2006 से महादशा भी राहु की है जो अष्टमस्थ होकर कारक गुरु को पीड़ित कर रहा है और शुक्र भी दोनों कुंडलियों में त्रिकभावस्थ है। इसके अतिरिक्त, सप्तम भाव को अष्टकवर्ग में 28 से कम शुभ बिन्दु प्राप्त हैं।

उदाहरण–2 :

पुरुष, 19 सितम्बर 1993, 20:30 बजे, शिवपुरी, मध्यप्रदेश।

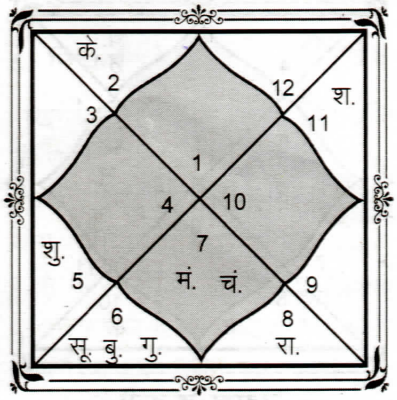

नवांश कुंडली

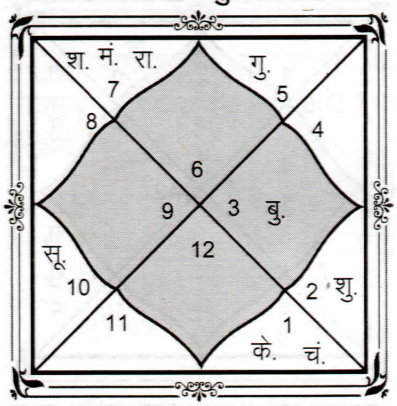

सप्तम भाव मंगल से पीड़ित, सप्तमेश शुक्र शत्रुराशिस्थ होकर शनि से भी पीड़ित और कारक गुरु त्रिकभावस्थ एवं पीड़ित। नवांश लग्न और सप्तम भाव शुभाशुभ प्रभाव रहित, परन्तु सप्तमेश एवं कारक गुरु त्रिकभावस्थ। जन्मकुंडली के लग्न और नवांश के लग्नेश के बली होने से पुरुष विवाह को रखने के प्रयास करता है, परन्तु दोनों पक्षों के माता–पिता की गलतियों से भी समझौता नहीं हो पा रहा है और तलाक लेने की बातचीत हो रही है।

उदाहरण 3 : सप्तम भाव शुभाशुभ प्रभाव रहित और सप्तमेश एवं कारक गुरु शत्रुराशिस्थ और पीड़ित। नवांश लग्न नीचस्थ शनि से दृष्ट और

उदाहरण 3

पुरुष, 9 अप्रैल 1981, 11.55 बजे, जबलपुर, मध्यप्रदेश

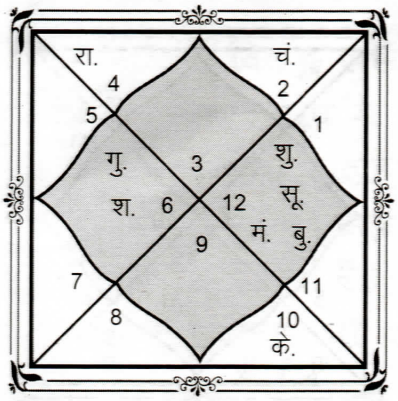

नवांश कुंडली

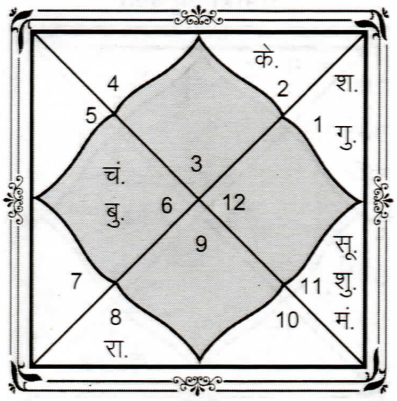

सप्तमेश एवं कारक गुरु शनि। दशा भी सप्तमेश की ही चल रही थी इसीलिए प्रभाव भी अधिक हुआ।

उदाहरण 4 :

पुरुष, 12 अगस्त 1987, 19:00 बजे, रेवाड़ी, हरियाणा।

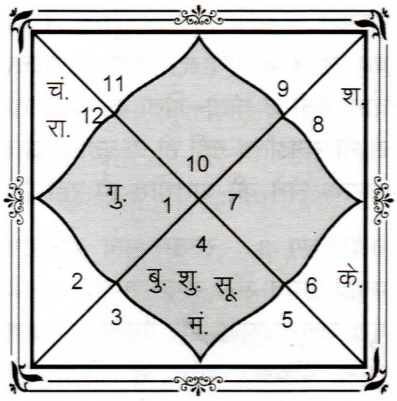

नवांश कुंडली

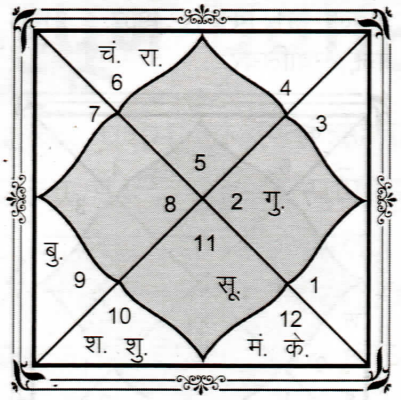

सप्तम भाव नीच राशिगत मंगल के साथ, षष्ठेश और अष्टमेश के भी सप्तमस्थ होने से जीवनसाथी को रोग और कलहप्रिय होना दर्शाता है। नवांश में सूर्य सप्तमस्थ हैं और सप्तमेश त्रिकभावस्थ है। दोनों कुंडलियों में कारक शुक्र भी निर्बल है। जातक का विवाह दिसम्बर 2017 में हुआ और थोड़े ही समय में आपसी तालमेल नहीं होने के कारण पति–पत्नी का झगड़ा हुआ और पुलिस–थाना हो गया। अभी इनका केस तलाक के लिए कोर्ट में चल रहा है।

उदाहरण 5 :

महिला, 10 अक्तूबर 1981, 18.25 बजे, कोट्टायम, केरल।

षष्ठेश सूर्य और द्वादशेश शनि सप्तमस्थ होकर सप्तम भाव को निर्बल

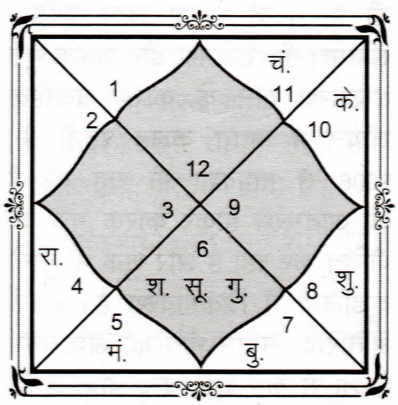

नवांश कुंडली

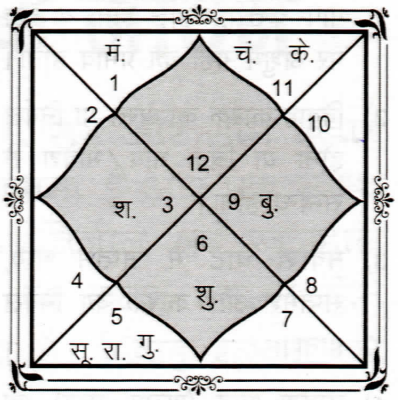

कर रहे हैं। सप्तमेश बुध अष्टमस्थ होकर निर्बल है। कारक गुरु सप्तम में शत्रुराशिस्थ और सूर्य एवं शनि से पीड़ित है। नवांश लग्न पीड़ित है और सप्तम भाव में नीच ग्रह स्थित है। सप्तमेश पर शनि की दृष्टि भी है। अतः नवांश में भी कुछ खास सुधार नहीं हुआ. जातिका का तलाक शनि/बुध में हुआ।

उदाहरण 6 :

महिला, 20 अगस्त 1982, 11:00 बजे, दिल्ली।

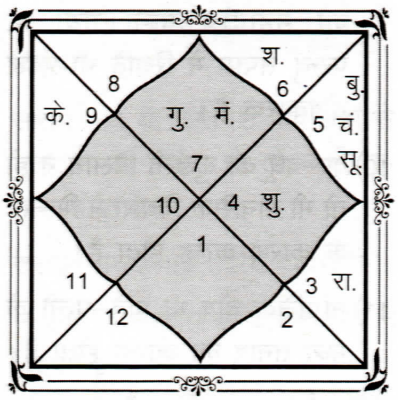

सप्तमेश लगनस्थ है, षष्ठेश गुरू से युत है और दोनों राहु के नक्षत्र में भी हैं। द्वादश भाव शनि से पीड़ित है जो सप्तमेश के नक्षत्र में है। नवांश में लग्नेश एवं कारक गुरु नीचराशिस्थ और सप्तमेश त्रिकभावस्थ होकर

नवांश कुंडली

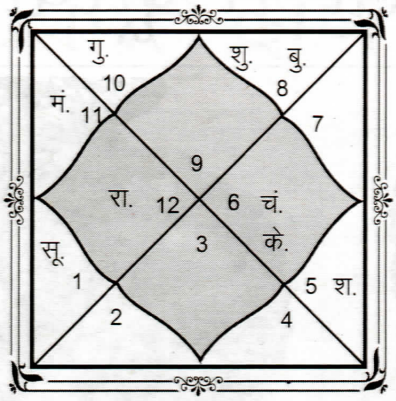

पीड़ित हैं। जातिका का विवाह 20 अप्रैल 2014 में मं/श/मं में हुआ और एक साल के दौरान ही दोनों में दूसरी महिला के कारण विवाद होना शुरू हुआ। कुछ समय बाद ये अलग–2 रहने लगे और अब पुनः साथ रह कर देख रहे हैं कि आगे निभा पायेंगे या नहीं। ये सब जातिका के साथ विदेश में ही हो रहा है।

उदाहरण 7 :

महिला, 23 अप्रैल 1971, 5:54 बजे, चिन्नई, तमिलनाडु।

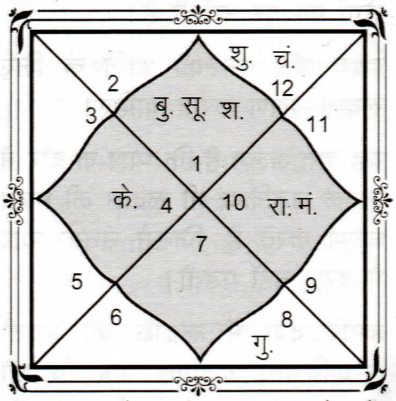

मांगलिक दोष रहित कुंडली है और विवाह भी कुंडली मिलान के पश्चात् ही हुआ था। फिर भी विवाह के कुछ समय पश्चात् ही तलाक हो गया। इस कुंडली में लग्न और लग्नेश पीड़ित हैं, द्वादश भाव में शुक्र और चन्द्र की युति अनैतिक सम्बन्ध भी देती है,

नवांश कुंडली

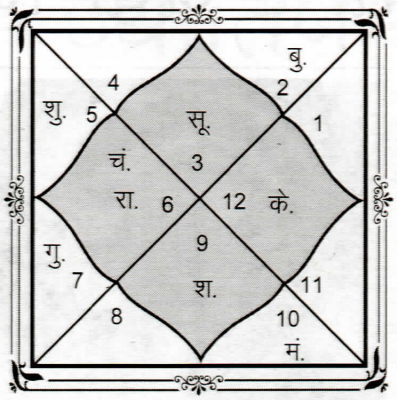

सूर्य–शनि का लग्न और सप्तम भाव से दोनों कुंडलियों में सम्बन्ध दाम्पत्य सुख का अभाव दर्शा रहा है, नवांश में भी सम्बंधित भाव–भावेश पीड़ित हैं और अष्टमेश भी सप्तमस्थ है। कुंडली में वैवाहिक जीवन सुचारू रूप से न चलने के अनेक योग हैं।

उपाय

कलहपूर्ण दांपत्य जीवन को सुधारने के लिए कुछ प्रचलित उपाय निम्न हैं :

- शिव–पार्वती का पूजन पति–पत्नी को नियमित करना चाहिए।
- गौरी–शंकर रुद्राक्ष 'ऊँ नमः शिवाय' का जाप करके शुक्ल पक्ष में सोमवार को गले में धारण करें।
- राधा–कृष्ण के नियमित पूजन से पति–पत्नी में अनुराग बढ़ता है।
- श्री बल्लभाचार्य विरचित मधुराष्टकम का नियमित पाठन और श्रवण करने से दम्पत्ति में मधुरता बढ़ती है।
- पति–पत्नी को एक ही रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए।
- सप्तम भाव/सप्तमेश को पीड़ित करने वाले ग्रह से संबंधित जाप व अनुष्ठान करना।
- दोनों पक्षों की त्रयोदशी तिथि को प्रदोष व्रत किया जाता है, यह दिन यदि शुक्रवार हो तो इस दिन व्रत रखना चाहिए।

5. निष्कर्ष

सुखमय जीवन और कुटुम्ब की वृद्धि के उद्देश्य से मनुष्य विवाह के पवित्र बंधन में बंधता है। इस लेख में वर्णित योग, युति, भाव/भावेश की स्थिति, दशा और उदाहरणों से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि जातक का दांपत्य जीवन सुखद रहेगा या कलहपूर्ण। अतः उचित ज्योतिषीय आकलन से जातक का सही मार्गदर्शन होता है जिससे जातक वैवाहिक जीवन को सुधारने का प्रयास कर सके और सही निर्णय ले।

3 –बी साईं नगर हरिशंकर पुरम, मुक्ता नन्द आश्रम, श्री राम कॉलोनी, लश्कर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।
दूरभाष : 7828048273

कंप्यूटर जन्माक्षर
विश्व प्रसिद्ध सॉफ्टवेयर लियो स्टार द्वारा निर्मित
• नवजात शिशुओं के लिये भाग्यशाली नाम एवं नक्षत्रफल • विवाह के लिए कुंडली मिलान
• लाल किताब के सरल उपाय
• ज्योतिषीय सरल उपाय
• अंकशास्त्र • एस्ट्रोग्राफ एवं प्रश्नफल
नोट : यहां फ्यूचर पॉइंट की ज्योतिषीय सामग्री भी मिलती है।
संपर्क : कुसुम गर्ग –
B-16,
Shreeji Bunglows, Sun Pharma Road, Vadodara-390020,
Gujarat,
Phone : 09327744699